एम० ए० I सेमेस्टर (हिन्दी)

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज, आरा

द्वितीय पत्र (इतिहास दृष्टि)

प्रश्न: आदिकाल को किन-किन नामों से जाना जाता है? इस उक्ति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

—— काल विभाजन के संबंध में देशी एवं विदेशी विद्वानों ने साहित्य के इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित आधारों को ग्रहण किया है —

1. ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार - आदिकाल, मध्यकाल आदि।
2. शासक और शासन काल के आधार पर — विक्टोरिया युग, मराठा काल।
3. लोक नायक या साहित्य नेता के प्रभाव से — चैतन्य, काल, गाँधी युग, भारतेन्दु युग
4. राष्ट्रीय, सामाजिक अथवा साँस्कृतिक घटना या आंदोलन के अनुसार — अभिव्यक्ति काल, पुनर्जागरण काल, स्वातंत्र्योत्तर काल आदि।
5. साहित्यिक प्रवृत्ति के अनुसार — वीरगाथा काल, रोमानी युग

काल का विभाजन करके नामकरण करने वाला पहला इतिहासकार जार्ज ग्रियर्सन हैं। उन्होंने आदिकाल को 'चारण काल' की संज्ञा दी है। वे इसका समय 643ई० तक पीछे ले जाते हैं। किंतु उस समय की किसी कृति का उल्लेख नहीं कर सके। वस्तुतः उस प्रकार की रचनाएँ सन् 1000 ई० के आस-पास मिलती हैं।

मिश्र बंधु हिन्दी साहित्य को 643ई० से 1387 ई० तक को 'प्रारंभिक काल' मानते हैं। मिश्र बंधुओं ने इसके पीछे किसी प्रवृत्ति का ध्यान नहीं रखा। यदि भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो इसके कुछ उप-विभाजन भी हैं —

1. पूर्व प्रारंभिक हिन्दी (643ई — 1290ई०)
2. चंद पूर्व की हिन्दी (643ई. — 1191ई.)

P.T.O.

3. सर्वोकाल की हिन्दी — 1143–1290)

4. उत्तर आधुनिक हिन्दी (1291 — 1387)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने वीरगाथा काल को बीज वपन काल कहा था। उनके मत से उस समय हिन्दी अपने शैशव काल में थी। किंतु हम जानते हैं कि इस काल का साहित्य अपने आप में पूरी तरह प्रौढ़ है। उसमें परिष्कृत सामान्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं। इसलिए द्विवेदी जी के सुझाव को नहीं माना जा सकता।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के आधार पर इस काल को वीरगाथा काल का नाम दिया। शुक्ल जी ने बारह ग्रंथों के आधार पर यह सिद्ध किया कि इस काल का नाम वीरगाथा काल होना चाहिए। आधुनिक खोजों से यह पता चलता है कि इनमें से कुछ ग्रंथ अप्रामाणिक हैं तो कुछ अर्धसंदिग्ध जिनकी प्रामाणिकता भी संदेह है। अतः इन ग्रंथों के आधार पर किए गए नामकरण पर किसी को भी आपत्ति हो सकती है। आज के विद्वान साहित्य की प्रवृत्तियों के आधार पर इसे वीरगाथा काल नहीं मानते।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है कि शुक्ल जी के इतिहास में साहित्य को मानव समाज के सामूहिक चित्त की अभिव्यक्ति के रूप में न देखकर केवल शिक्षित समझी जाने वाली जनता की प्रवृत्तियों के परिवर्तन के निदर्शन के रूप में देखा गया है। शुक्ल जी ने सिद्धों एवं नाथों की रचनाओं को इसलिए अप्रामाणिक माना, क्योंकि उनकी रचनाओं में जीवन की स्वाभाविक सरणियों एवं अनुभूतियों और दशाओं का से कोई संबंध नहीं है। जहाँ तक उपलब्ध सामग्री की प्रामाणिकता की बात है तो इसमें कुछ अर्द्धसंदिग्ध हैं तो कुछ संदिग्ध। अर्द्धसंदिग्ध सामग्री में जो कुछ है उसकी भाषा अपभ्रंश या प्राकृत से हिन्दी है। अतः स्पष्ट है शुक्ल जी स्वयं 'रासो ग्रंथ' को संदिग्ध मानते थे। अतः इन ग्रंथों के आधार पर दिया गया नाम गलत है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

- विश्वनाथ मिश्र ने इस काल को 'वीर काल' कहा है। यह नाम शुक्ल के नाम का रूपांतर है। जो नवीनता से चौंकाता है। पर इस मामले में कोई तथ्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

डा० राम कुमार वर्मा इसे 'संधि काल' कहते हैं और 'चारण काल' कहते हैं। प्रथम खंड भाषा की ओर संकेत है द्वितीय नाम एक वर्ग का बोधक करता है। ये दोनों नाम मिलकर भी किसी प्रवृत्ति का बोध नहीं कराते। नामकरण का यह मत भी निराधार है।

राहुल सांकृत्यायन ने इस काल के काव्य में दो प्रकार के तत्व पाए हैं — (1) सिद्धों की वाणी (2) सामंतों की स्तुति। इसलिए उन्होंने इसे 'सिद्ध-सामंत' नाम दिया। परन्तु इस नाम से महत्वपूर्ण लौकिक रस की रचनाओं का कुछ भी आभास नहीं मिलता जो परवर्ती काव्य में व्यापक रूप से प्रकट हुए हैं।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी और डा० धीरेन्द्र वर्मा ने इस काल को 'अपभ्रंश काल' का नाम दिया है। इस काल की रचनाओं में अपभ्रंश की मात्रा बहुत है किंतु भाषा के आधार पर दिये गए इस नाम को साहित्य के इतिहास के अंतर्गत स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को 'आदिकाल' के नाम से अभिहित किया है। उनके अनुसार दो प्रकार के साहित्य इस काल में देखने को मिलते हैं —
(1) बौद्ध-सिद्ध-नाथ और जैन मुनियों का साहित्य।
(2) चारण कवियों के चरित-काव्य, जिनमें राज-स्तुति, युद्ध, विवाह आदि के वर्णन हैं।

पहली तरह की रचनाओं का साहित्य में दो नजरियों से है। एक तो धार्मिक काव्यों के रूप विकास में ये सहायक हैं जिनके बिना हम काव्य प्रयोजनों को समझ ही नहीं सकते। दूसरा, इसके अध्ययन से उस युग की भाषा-शैली, छंदो-विधान आदि का अध्ययन सुगम होता है। जितनी दूर तक मनुष्य चित्त की रूढ़ि के विचार से मुक्त करके सहज रूप तक पहुँचने में इन रचनाओं के

सहयोग किया, उतनी दूर तक साहित्य के अंतर्गत गिने जा
योग्य है। दूसरी श्रेणी की रचनाओं में साधारणतः परंप
से प्राप्त काव्य रुढ़ियों के साँचे ढली हुयी, बंधे
बंधाए मार्ग में चलती हुयी कविता की प्राप्ति होती है। अतः
इसे 'आदिकाल' कहने में कोई बुराई नहीं है।

'वीरगाथा काल' के संबंध में ऊपर जितने नाम
सुझाए गए हैं उनकी छानबीन से पता चलता है कि
'आदिकाल' ही सबसे उपयुक्त नाम है। यह एक ठोस
सच्चाई है कि इस नाम को किसी न किसी रूप में
हमारे सभी इतिहासकारों ने स्वीकार किया है। आचार्य
शुक्ल जी ने जो कालक्रम की दृष्टि से इस काल का नाम
'आदि काल' रखा है इतिहासकारों ने उसकी जगह 'प्रारंभिक
काल' रखने की सलाह दी है।

डा० राम गोपाल शर्मा 'दिनेश' के शब्दों में—
"इस नाम से उस व्यापक पृष्ठभूमि का बोध होता है जिस
पर आगे का साहित्य खड़ा है। भाषा की दृष्टि से हम इस
काल को साहित्य में हिन्दी के आदि रूप का बोध होता है।
भाव की दृष्टि से इसमें भक्तिकाल से आधुनिक काल के
सभी प्रवृत्तियों के आदिम बीज खोज सकते हैं। जहाँ तक
रचना-शैलियों का प्रश्न, इनके भी वे सभी रूप जो पर-
वर्ती काव्य में प्रयुक्त हुए, अपने आदिम रूप में मिल
जाते हैं।"

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आदिकाल की
सामग्रियों को और परखने की जरूरत है। अभी तक आदि-
कालीन बहुत-सी चीजें प्रकाश में नहीं आयी हैं। जब तक
अन्य कोई शोध या सटीक रूप हमारे सामने नहीं आ
जाता तब तक 'आदिकाल' को ही आदिकाल कहना
समीचीन प्रतीत होता है। यह ऐसा नाम है जो उस काल
की व्यापकता को हर दृष्टि से अपने अन्दर समाहित
किए हुए है।

Scanned with CamScanner